Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

वर्ण – व्यवस्था

लक्ष्मण तिवारी
शोधच्छात्र,
संस्कृत विभाग (कला संकाय),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी (उत्तरप्रदेश) भारत।

सारांश – वैदिककालीन वर्ण – व्यवस्था सामान्यत: कर्म पर आधारित थी, जिनका विभाजन गुण एवं कर्म के आधार पर किया गया था, न कि जन्म के आधार पर। स्मृतिकार मनु ने भी उपर्युक्त चारों वर्णों के पृथक् – पृथक् कर्म बताए हैं। जिनमें ब्राह्मण का कर्त्तव्य अध्ययन करना, अध्ययन कराना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना एवं दान लेना है। क्षत्रिय का कर्त्तव्य प्रजाओं की रक्षा करना आदि है। वैश्य का कर्त्तव्य पशुओं की रक्षा करना आदि। शूद्र का कर्त्तव्य चारों वर्णों की निष्कपट होकर सेवा करना बताया गया है।

मुख्य शब्द– वर्ण, व्यवस्था, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सुवर्ण।

वर्ण–व्यवस्था का सर्वप्रथम वर्णन ऋग्वेद में मिलता है।[1] यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में चारों वर्णों का वर्णन अनेक स्थानों पर प्राप्त होता है। शब्दकोष में 'वर्ण' शब्द का अर्थ है– कुङ्कुम, सुवर्ण, शुक्लादिरुप, अकारादि अक्षर, यश ब्राह्मणादि जाति इत्यादि वर्णित है। 'वर्ण' शब्द के विविध अर्थ होते हैं। सामान्यत: प्रत्येक शब्द के दो अर्थ होते हैं – प्रवृत्तिमूलक एवं व्युत्पत्तिमूलक। इन अर्थों में 'वर्ण' शब्द का अर्थ जाति भी है। 'वर्ण' शब्द समाज के अर्थ में भी प्रयोग होता है। इस प्रकार समाज चार वर्णों में विभक्त था – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र।

यजुर्वेद में चारों वर्णों के कर्तव्यों का वर्णन बहुत ही मार्मिक ढ़ंग से अभिव्यक्त किया गया है –

ब्रह्मणो ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रम् ।[2]

अर्थात् (1) ब्राह्मण का कर्त्तव्य है – ब्रह्मन्, ज्ञान, शिक्षा और धर्म–विषयक समस्त कार्य,

(2) क्षत्रिय का कर्त्तव्य है – क्षत्र, राष्ट्र और देश की सुरक्षा,

(3) वैश्य का कर्त्तव्य है – मरुत्, मरुत् देवों के जैसा देश– देशान्तर से व्यापार और धन की वृष्टि करना, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बनाये रखना,

(4) शूद्र का कर्त्तव्य है – तपस् परिश्रम से होने वाले समस्त कार्य, शिल्प आदि।

मनुस्मृति में ब्राह्मणादि वर्णों की सृष्टि का वर्णन किया गया है। जिसमें यह बताया गया है कि लोकवृद्धि के लिए ब्रह्मा ने मुख, बाहु, उरु, और पैर से क्रमश: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की सृष्टि की।

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादत:।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्त्तयत् ॥[3]

मनुस्मृति में ब्राह्मणादि चारों वर्णों के पृथक् – पृथक् कर्म बताये गये हैं –

सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थ स महाद्युतिः।

मुखबाहूरुपज्जानां पृथक्कर्माण्यकल्पयत् ॥[4]

अर्थात् उस महातेजस्वी ब्रहमा ने इस सम्पूर्ण सृष्टि की रक्षा के निमित्त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के अलग – अलग कर्मों की सृष्टि की।

ब्राह्मण के कर्म – अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।

दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥[5]

अर्थात् पढ़ाना, पढ़ना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना, ये छः कर्म ब्राह्मण के लिये कहे गये हैं।

क्षत्रिय के कर्म – प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।

विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥[6]

अर्थात् प्रजाजनों की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना एवं विषयों में आसक्ति न रखना, इन कर्मों को क्षत्रिय के लिए बनाया गया है।

वैश्य के कर्म – पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।

वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च ॥[7]

अर्थात् पशुओं की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना, वेद पढ़ना, व्यापार करना, व्याज लेना और खेती करना वैश्यों के लिए कर्म बताया गया है।

शूद्र के कर्म – एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।

एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया॥[8]

अर्थात् ब्रह्मा ने ब्राह्मणादि तीनों वर्णों की अनिन्द्यभाव से सेवा करना ही शूद्र का प्रधान कर्म बताया है।

वैदिक वर्णव्यवस्था 'कर्म' पर आधृत थी। इनका विभाजन गुण एवं कर्म के आधार पर किया गया था। श्रीमद्भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय में श्रीभगवान् कहते हैं –

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।

तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥[9]

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र मेरे द्वारा ही बनाये गये हैं तथा उनमें सभी का गुण – कर्म विभाग के अनुसार ही विभाजन किया गया है, न कि जाति के आधार पर। सामान्यतः ब्राह्मण बुद्धिमान एवं सत्त्वगुणसम्पन्न होते हैं, क्षत्रिय रजोगुणसम्पन्न, वैश्य रजो एवं तमोगुणसम्पन्न तथा शूद्र श्रमिक तथा तमोगुणसम्पन्न हैं।

वैदिक काल में चारों वर्णों में सामंजस्य, प्रेम और सद्भाव था। ऊँच – नीच, छोटे – बड़े, स्पृश्य – अस्पृश्य आदि का भाव बिल्कुल भी नहीं था। चारों वर्णों को वेदाध्ययन का अधिकार था।[10] अतः यजुर्वेद और अथर्वेद में चारों वर्णों की सुख – समृद्धि तथा तेजस्विता की प्रार्थना की गई है।[11]

प्रत्येक अपने गुण के आधार पर ही वर्ण बनाना चाहिये। जन्म से उत्पन्न ब्राह्मण भी संस्कार बिना शूद्र ही है। जैसा कि मनु ने कहा है –

योऽनधित्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।।
फिर लिखते हैं –
जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेदपाठाद् भवेत् विप्रो ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः।।

मनुस्मृति सबसे प्राचीन, प्रामाणिक तथा प्राचीन भारत के संविधान के रुप में विख्यात है। इसलिए जन्म से ही कोई भी ब्राह्मण नहीं है। जन्म से सभी मानव शूद्र है। जिनमें षोडश संस्कार होते हैं, वे सभी द्विज (ब्राह्मण) हैं , अन्यथा शूद्र ही हैं। वेदाध्ययन करने से वे सभी विप्र (ब्राह्मण) हैं, अन्यथा नहीं। जो ब्रह्म को जानते हैं, अर्थात् जिनमें ब्रह्मविषयक ज्ञान होता है, वे सभी ब्राह्मण हैं, अन्यथा नहीं।

वेद के अधिकारी कौन हैं? इस सन्दर्भ में तैत्तिरीय संहिता में वर्णित है – तीन वर्ण वेद के अधिकारी हैं। स्त्री – शूद्र वेद के अधिलारी नहीं हैं। अर्थात् ऐसा कहा गया है कि स्त्री – शूद्र का वेदाध्ययन अनिष्टप्राप्ति का हेतु है। भागवतपुराण में उल्लिखित है –

स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा।
कर्मश्रेयसि मूढानां श्रेय एवं भवेदिह।।
इति भारतमाख्यानं मुनिना कृपया कृतम् ।।[12]

परन्तु अनेक दासपुत्र भी वेद के अधिकारी हुए। जैसे –ऐतरेय , ऐलुष , सत्यकाम और जाबाल। ये न केवल वेद के अधिकारी , बल्कि वैदिक ऋषि भी हुए। घोषा , यमी , उर्वशी , गार्गी , मैत्रेयी और सुलभा ये वैदिक स्त्री ऋषि और ब्रह्मवादिन्य हुए।

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में मानवों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में कहा गया है – विराट्पुरुष के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय , ऊरु से वैश्य एवं पादों से शूद्र उत्पन्न हुए।

जैसा कि कहा गया है –
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।[13]

अतः उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि वैदिककालीन वर्ण – व्यवस्था सामान्यतः कर्म पर आधारित थी, जिनका विभाजन गुण एवं कर्म के आधार पर किया गया था, न कि जन्म के आधार पर। स्मृतिकार मनु ने भी उपर्युक्त चारों वर्णों के पृथक् – पृथक् कर्म बताए हैं। जिनमें ब्राह्मण का कर्त्तव्य अध्ययन करना , अध्ययन कराना, यज्ञ करना , यज्ञ कराना, दान देना एवं दान लेना है। क्षत्रिय का कर्त्तव्य प्रजाओं की रक्षा करना आदि है। वैश्य का कर्त्तव्य पशुओं की रक्षा करना आदि। शूद्र का कर्त्तव्य चारों वर्णों की निष्कपट होकर सेवा करना बताया गया है।

सन्दर्भ–

[1]. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरु तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ ऋगु 10.90 । यजु 31.11

[2]. यजु 30.5

[3]. मनुस्मृति 1.31

[4]. मनुस्मृति 1.87

[5]. मनुस्मृति 1.88

[6]. मनुस्मृति 1.89

[7]. मनुस्मृति 1.90

[8]. मनुस्मृति 1.91

[9]. श्रीमद्भगवद्गीता 4.13

[10]. यथेमां वाचं कल्याणीमा वदानि जनेभ्य: ।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च् । यजु 26.2

[11]. (क) रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु , रुचं राजसु नस्कृधि ।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु , मयि धेहि रुचा रुचम्॥ यजु 18.48
(ख) प्रियं मा कृणु देवेषु , प्रियं राजसु मा कृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ॥ अथर्व् 19.62.1

[12]. भा 1.4.25

[13]. ऋग्वेद: 10.90